Sem VI DSE III - B

Conflict and Peace Building

शांति ~~शांति~~ का मतलब साधारणतया किसी भी प्रकार के गंभीर संघर्ष की अनुपस्थिति है।

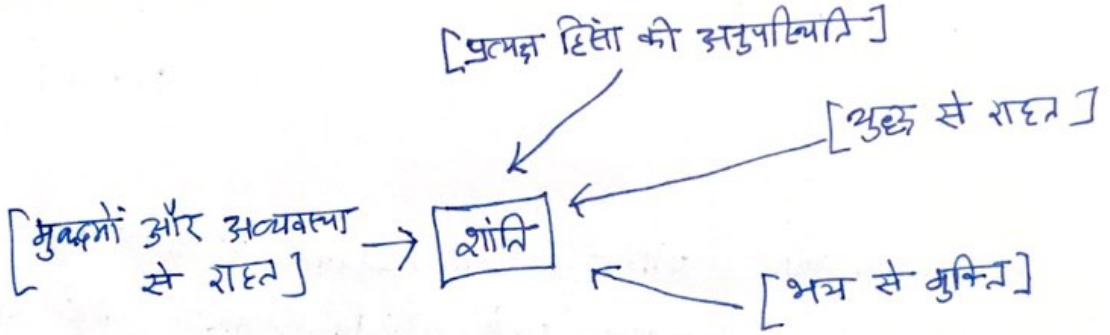

शांति की परम्पराएँ सभी धार्मिक और दार्शनिक परम्पराओं में रही है और समृद्धी को प्राप्त हुई है अर्थात निरंतर दूसरे के कल्याण और जीवित प्राणियों के लिए करुणा पर बल दिया गया है। शांतिपूर्ण विश्व उसे कहा जाएगा जहाँ लोग सौहार्द और मैत्रीपूर्ण ढंग से साथ-साथ काम करते हैं और रहते हैं।

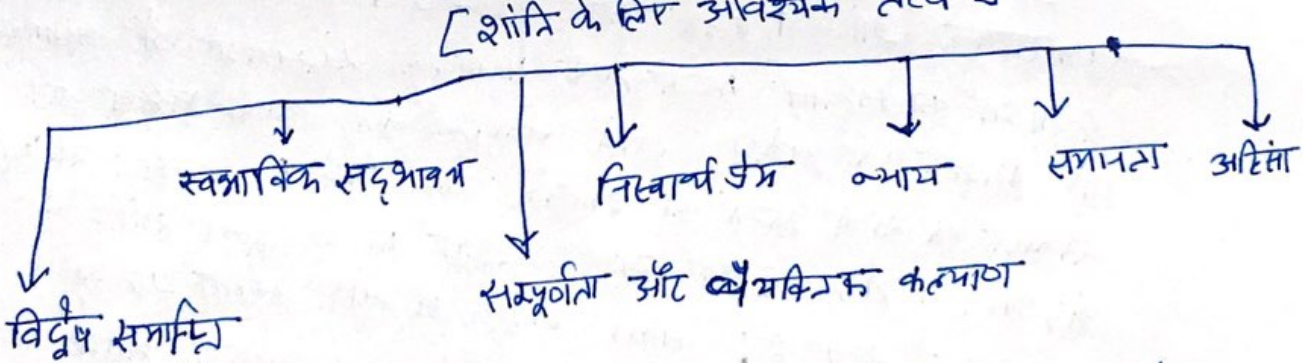

शांतिवादी अराजकतावादी तथा आदर्शवादी विचारकों जैसे टॉलस्टाय के अनुसार दमन तथा हिंसा के लिए राज्य जैसा शक्ति तंत्र उत्तरदायी है राज्य जैसी संरचना के उन्मूलन से युद्ध समाप्त किया जा सकता है।

समाजवादी विचारकों के अनुसार वर्गहीन समाज में शांति प्राप्त की जा सकती है। अशांति का कारण आर्थिक असमानताएँ हैं।

[signature]
27.3.20

Sem VI DSE III B

[शांति]

[नकारात्मक शांति] — युद्ध की अनुपस्थिति

[सकारात्मक शांति] — युद्ध की अनुपस्थिति के साथ सामाजिक और आर्थिक न्याय

नकारात्मक शांति - संधि वार्ता या मध्यस्थता से प्राप्त की जा सकती है
यह अहिंसात्मक उपायों जैसे पूर्ण निरस्त्रीकरण और सामाजिक
तथा आर्थिक रूप से एक दूसरे पर निर्भरता को प्रेरित करता है।
यह संघर्ष की स्थिति में बल के प्रयोग को हतोत्साहित करता है
नकारात्मक शांति में अंतर्राष्ट्रीय समझौते तथा संस्थाओं की भी (~~[illegible]~~, संयुक्तराष्ट्र)
आवश्यकता होती है।

सकारात्मक शांति के लिए ऊपर वर्णित दशाओं के साथ समान
दशाओं का विकास करना ताकि सामाजिक संरचनाओं में असमानता
को मिटाया जा सके। इसमें समानता का काफी महत्व है।
समाज के सभी लोगों को आर्थिक लाभ मिले। व्यवहार संबंधी
भेदभाव न हो। दमन और गरीबी का उन्मूलन शांति के
आवश्यक तत्व हैं। समान अवसर से लोग अपनी प्रतिभा
और क्षमता का विकास कर सकते हैं। सकारात्मक शांति के
विद्वान जोहान गाल्टुंग को कहा जाता है। भारत में
महात्मा गांधी ने भी सकारात्मक शांति की परम्परा का
अनुसरण किया था। अहिंसक सामाजिक संरचना समतावादी
सामाजिक संबंधों को स्थापित कर प्राप्त हो सकती है।

Bhagyalaxmi [illegible]
27.3.20